हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह
B.A., Part I

विषय - सूफी काव्य को जन्म देनेवाली परिस्थितियाँ

वीरगाथाकाल के समाप्त होने के पहले ही साहित्य के क्षेत्र में क्रांति प्रारम्भ हो गई थी। मुसलमानों के बढ़ते हुए आतंक ने जनता के साथ सारे साहित्य को भी अस्थिर कर दिया था। मुसलमानों की शक्ति और धर्म के विस्तार ने साहित्य का दृष्टिकोण ही बदल दिया था, तथा हिन्दी साहित्य की धारा अपने पुराने उद्दाम और ओजस्वी वीरगाथात्मक रूप को छोड़कर भक्ति की प्रशान्त-ललित कविता के रूप में प्रवाहित होने लगी थी। मुसलमानों के बढ़ते हुए प्रभुत्व ने हिन्दू राजाओं जर्जरित कर दिया था। वे स्वयं ही लड़ते-लड़ते हो गये थे। अतः अब न तो उनके पास गौरव रहा और न गाने की सामग्री ही। कवियों का क्षीण हो गया था।

मुसलमानों की प्रवृति केवल ल

धन-संचय की न होकर भारत में राज्य-स्थापित करने की भी थी। मुसलमान अपने राज्य-विस्तार के साथ-साथ धर्म का भी विस्तार कर रहे थे। हिन्दू जनता पर मनमाने अत्याचार किए जा रहे थे, क्योंकि हिन्दुओं में मुसलमानों से प्रतिकार लेने की शक्ति तो थी नहीं, और न वे अपने धर्म की अवहेलना ही सहन कर सकते थे। ऐसी अवस्था में निर्बल के बल 'राम' के आधार पर भगवान का आह्वान किया गया। कभी-कभी यदि राख में छिपी चिंगा[री] की तरह वे भड़क भी पड़ते थे, तो दूसरे क्षण ही शांत हो जाते थे। इस प्रकार उन्होंने दुष्टों को दं[ड] देने का कार्य भगवान पर छोड़ दिया।

<u>धार्मिक परिस्थितियाँ</u> — कबीर के हिन्दी-सा[हित्य] में आविर्भाव के समय हिन्दू-मुस्लिम जनता [में] वैमनस्य था। परन्तु कबीर ने उन दोनों में [...] स्थापित करने के लिए मध्यम मार्ग का [...] किया। हिन्दुओं ने मुसलमानों की निर्गुण-[...] को निःसंकोच भाव से स्वीकार किया, उ[...] मुसलमानों ने भी हिन्दुओं के सिद्धान्तो[...]

नतमस्तक होकर अपनाना शुरू किया। उत्तर भारत में
योगी या नागपंथी साधु निराकार का प्रचार कर रहे थे।
दूसरी ओर दक्षिण में रामानुज, निम्बार्क और माध्वाचार्य
आदि राम, कृष्ण और नारायण की उपासना के प्रचार
कर रहे थे। इस समय उत्तर भारत का वातावरण युद्धमय
था, अतः धार्मिक भावनाओं को अभी तक पनपने का
अवसर नहीं मिला था, परन्तु थोड़ी सी शक्ति होते ही
यह धार्मिक भावना विस्तृत क्षेत्र में व्याप्त होने लगी।
कबीर ने निर्गुण उपासना का उपदेश और हिन्दू एवं
मुसलमानों को समीप लाने का प्रयत्न किया। अबतक
संघर्षों से समाज का हृदय क्षुब्ध और जनता का
जीवन नीरस था। उनके मन और हृदय शांत नहीं
। तब कुछ सूफी भक्तों ने नीरसता का निराकरण करने
लिए सच्ची सरलता का संचार किया और जन-जीव
आह्लादित कर दिया।

सामाजिक परिस्थितियाँ — निर्गुणोपासक कबीर के आ
पूर्व समाज की स्थिति अत्यधिक विषम थी
वैमनस्य, सामाजिक संकीर्ण एव
हिन्दू-मुसलमान

तथा अंधविश्वास का चरम प्रसार सारे समाज को अन्धकारमय किए हुए था। कबीर की निर्गुणोपासना ने साहित्य की अपेक्षा समाज को अधिक प्रभावित किया। कबीर सुधारक पहले थे और कवि पीछे। उन्होंने यह देखा कि धर्म के बाह्य विधि-विधानों से ही हिन्दू और मुसलमान परस्पर लड़ते-भिड़ते हैं। हिन्दू पूर्व की ओर मुख करके प्रार्थना करता है तो मुसलमान पश्चिम की ओर से खुदा को पुकारता है। कबीर ने दोनों धर्मों के बाह्य-आडम्बर को छिन्न-भिन्न करना चाहा।

संत कवियों का दृष्टिकोण सुधारवादी था। उस समय समाज में कुरीतियों, पाखण्ड एवं आडम्बरों का बोलबाला था। अतः संत कवियों ने समाज को सुधारने का प्रयास किया। कबीर ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को फटकारा। की सामाजिक और धार्मिक संकीर्णता ने ही उनकी गति और सामाजिक विकास को रोका। कबीर र स्थिति को भली-भाँति समझते थे।